P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मध्य प्रदेश की गोंड जनजातियों की ऐतिहासिकता एवं संस्कृति का अध्ययन

नीतू यादव
शोध छात्रा
चित्रकला विभाग,
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनीवर्सिटी),
दयालबाग, आगरा,
उ.प्र., भारत

सारांश

भारत बहुसांस्कृतिक, बहुभाषीय, बहुप्रजातीय, एवं बहुधर्मी देश है। भारतवर्ष की सभ्यता व संस्कृति की सम्पूर्णता अद्भुत व अनूठी है, इसलिए भारत को अनेकता में एकता का देश कहा जाता है। अनेक प्रजातीय तत्वों के मिश्रण होने के कारण इसे प्रजातियों का अजायबघर भी कहा जाता है। भारत के वन प्रदेशों तथा पर्वतीय स्थानों व क्षेत्रों में निवास करने वाले अनेक मानव–समुदाय मानव सभ्यता के विकास क्रम में विभिन्न कारणों से पृथक रह गए, जिसके समुदाय सभ्यता के विकास की दृष्टि से अभी तक आरम्भिक सोपानों पर ही आश्रित होकर जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

वनीय क्षेत्रों एवं जंगलों में रहने वाले जातीय समुदाय को सभ्य लोगों ने आदिवासी, वनवासी, आदिमजाति, वन्यजाति, गिरिजन व जनजाति आदि नामों से सम्बोन्धित किया है तथा इन्हें देशज समाज भी कहा गया है।

मुख्य शब्द : मध्य प्रदेश, आदिम जनजाति, गोंडजाति, इतिहास, संस्कृति।

प्रस्तावना

वैदिक एवं उत्तरवैदिक काल और महाकाव्यों में जनजातियों के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखित किए गऐ हैं। समाज शास्त्री, इतिहासकार और पुरातत्ववेत्ता आदि सभी आदिवासी जनजातियों को अत्यधिक प्राचीन निवासी मानते हैं, कुछ विद्वानों का मत है कि सिन्धु घाटी सभ्यता से पूर्व द्रविण जब भारत आये उस समय इस देश में आदिवासी निवासरत थे। द्रविणों के साथ युद्ध में पराजित होने के कारण प्राचीन आदिवासी अपनी स्वतंत्रता व आत्म रक्षा के लिए घने जंगलों, पर्वतीय इलाकों, तराईयों तथा घाटियों में जाकर निवास करने लगे। कालान्तर में इस देश में आर्य, मंगोल, कुषाण, शुंग, हूण, मुगल आदि का प्रवेश हुआ और वे स्थाई रूप से अपना साम्राज्य स्थापित कर विकास की ओर अग्रसर होते रहे। किन्तु यहाँ के प्राचीनतम् मूल निवासी आदिवासी जन सघन जंगलों व घाटियों में जा बसे।

आदिम जनजाति ही प्रचीनतम् संस्कृति के निर्माता एवं प्रर्वतक हैं, इनमें कोई मतभेद नहीं है। आदिवासी चाहे आर्यों से पूर्व यहाँ बसे हो या उनके साथ ही रहे हो, परन्तु ये आर्यों से पृथक एक ऐसे मानव समूह के रूप में रहे जो प्रकृति की गोद में स्वतंत्र एवं आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करते रहे हैं। संम्भवतः इस कारण आर्यों से भिन्न इन जनजाति समूह के इन समुदायों को अनार्य तो कहा जा सकता है, किन्तु असांस्कृतिक या जंगली कहना सर्वथा अनुचित है। इस मानव समूह को इनकी विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ पहचानना ही उचित है।

पाश्चात्य देशों में 'जिप्सी' कहा जाता है। वास्तविकता यह है कि ये जनजातियाँ इस देश की मुख्य निवासी हैं, सभ्यता के विकास के साथ सबल समुदायों ने इन्हें वनीय अंचलों व जंगलों में धकेल दिया।

जनजाति क्या है? इसके विषय में प्राख्यात भारतीय मानवशास्त्रीय डी॰ एन॰ मजूमदार ने भारतीय परिवेश में जनजाति की परिभाषा देते हुए कहा है कि– किसी भी जनजाति परिवारों तथा पारिवारिक वर्गों का ऐसा समूह है, जिसका अपना एक सामान्य नाम है, जिसके सदस्य एक निश्चित भू–भाग पर निवास करते हैं, एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं, विवाह, व्यवसाय सम्बन्धी कुछ नियमों का पालन करते हैं तथा एक सुनियोजित आदान–प्रदान का विकास करते हैं''।

ट्राइब शब्द की परिभाषाएँ तो अनेक हैं किन्तु जब से यह शब्द 'इडिजिनस' शब्द का पर्याय हुआ है तब से इसके अकादमीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ में बहुत परिर्वतन आ गया है। समाजशास्त्रियों एवं साहित्यकारों ने

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अपने–अपने क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप जनजातीय समाज के लिए अनेक शब्दों से सम्बोधन किया।

वेरियर एल्विन जिन्होंने भारतीय जनजातियों पर विस्तार से अधिकारिक तौर पर लिखा कि– जनजातियों के लिए 'ओरिजनल ओनर्स' शब्द अधिक उपयुक्त है।

विश्व में जनजातियों के विवरण की दृष्टि से भारत वर्ष में जनजातियों की संख्या अन्य देशों की तुलना में अधिक है। भारत भोगौलिक दृष्टि से विशाल आकार का देश है। भोगौलिक विशेषताओं के कारण यहाँ अनेकों ऐसी आदिवासी जनजातियाँ निवास करती हैं, जो सुदूर जंगलों में, पहाड़ों तथा पठारी क्षेत्रों में अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं। वर्तमान समय में भारतवर्ष में 700 से अधिक जनजातीय समूह हैं। जो भारत के विभिन्न भागों में फैली हुई हैं।

भारत का हृदय कहा जाने वाला राज्य 'मध्यप्रदेश' जो एक आदिवासी जनजातियों का बाहुल्य राज्य है, मध्यप्रदेश का एक चौथाई भाग आदिवासी जनजातियों का है। मध्यप्रदेश की आदिवासी जनजातियों के मुख्य 3 वर्ग हैं– प्रथम वर्ग में गोंड एवं गोंडो की अभ्युत्पन्न जनजातियाँ शामिल हैं। दूसरे वर्ग में भील तथा भीलों की निकटवर्ती जनजातियाँ हैं, वहीं तीसरे वर्ग में कोल व मुण्डा जनजातियाँ हैं।

मध्यप्रदेश में प्रमुख जनजातियों में जनसंख्या की दृष्टि से गोंड एवं भील सबसे बड़ी जनजातियाँ हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो बारहवीं शताब्दी तक जब राजपूतों ने मध्य भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित किया, तब इन आदिवासी जनजातियों का ही यहाँ स्वामित्व था। सोलहवीं शताब्दी तक गोंड जनजाति के राज्य महाकौशल क्षेत्र में प्रमुख रूप से विद्यमान थे। तत्पश्चात् दिल्ली शासक मुगल बादशाहों ने इन पर आधिपत्य कर लिया। आदिवासी जनजाति स्वयं की रक्षा हेतु सुरक्षित स्थानों पर चले गए, कुछ आक्रमणों द्वारा कठिन एवं अगम्य क्षेत्रों में धकेल दिए गए। पहाड़ी और जंगली क्षेत्र इन आदिवासियों के लिए न केवल सुरक्षा की दृष्टि से बल्कि जीवन यापन व संस्कृति के संरक्षण की दृष्टि से भी उपयुक्त थे। आज भी इन जनजातियों के निवास और जीवन यापन के लिए ये वनीय व पहाड़ी क्षेत्र सुरक्षित हैं।

गोंड जनजाति का ऐतिहासिक अध्ययन मध्यप्रदेश की नहीं वरन् भारत का सबसे बड़ा जनजाति समूह है। ऐतिहासिक एवं राजनैतिक सन्दर्भों में भी गोंड जनजाति भारतवर्ष की प्रमुखतम जनजाति है। भारत के मूल निवासी आदिवासी जनजाति ही मानी जाती है। गोंड जनजाति समुदाय इनमें पुरातन, प्रभावशाली व व्यापक समूह है।

मध्यप्रदेश के अतिरिक्त गोंड जनजातियाँ भारत के विभिन्न राज्यों महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, आदि में प्रमुखता से पायी जाती हैं।

उत्पत्ति

गोंड जनजातियों की उत्पत्ति से सम्बन्धित कोई ऐतिहासिक अभिलेख प्राप्त नहीं है। केवल उत्पत्ति सम्बन्धि

चित्र सं॰ 1 : गोंड जनजाति महिला, डिण्डौरी, म.प्र.

अनेक धारणाएं व मिथक प्रचलित हैं। गोंड शब्द की व्युत्पत्ति (द्रविड़) भाषा के 'कोण्ड' अर्थात् पर्वत से हुई है, अतः कोण्ड पर्वत के निवासी गोंड कहलाए।

एक अन्य धारणा यह है कि गोंड शब्द की उत्पत्ति 'गोंढ़' शब्द से हुई, बिहार एवं पश्चिम बंगाल का क्षेत्र 'गोंढ़' कहलाता है सम्भवतः यहाँ के निवासी गोंड नाम से प्रसिद्ध हुए। गोंड जनजाति की उत्पत्ति सम्बन्धित एक मिथक के अनुसार– एक तुम्बे (लौकी से निर्मित पात्र) से दो मनुष्य प्रकट हुए जिनमें से पहला बैगा हुआ और दूसरा गोंड। बैगा टंगिया (कुल्हाड़ी) लेकर जंगल काटने चला गया और गोंड ने नगर बसा लिया।

गोंड जनजाति समूह ऐतिहासिक दृष्टि से भारत की सबसे अधिक प्रभावशाली जनजाति समूह है। ये मूल रूप से द्रविड़ियन परिवार के माने जाते हैं, यह द्रविड़ संस्कृति का एक अंग हैं। 15$^{वीं}$ शताब्दी तक गोंडों ने मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, विन्ध्याचल एवं बुन्देलखण्ड के अधिकांश क्षेत्रों में सफलतापूर्वक शासन किया था। ऐतिहासिक उल्लेखों से ज्ञात होता है कि गोंड जनजाति के सबसे प्रतापी नरेश 'संग्रामशाह' और 'दलपतशाह' थे। जिन्होंने इस दुर्गम क्षेत्र में अनेक दुर्गों का निर्माण करवाया था। दलपतशाह की मृत्यु के पश्चात् रानी दुर्गावती ने राज्य शासन कुशलतापूर्वक सम्भाला।

रानी दुर्गावती राजपूत थीं किन्तु उनका विवाह राजगोंड दलपतशाह से हुआ था। राजगोंड अपने राज्यकाल में ही क्षत्रियत्व का दर्जा प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने धीरे–धीरे कबीली प्रवृत्ति को त्यागकर उच्चवर्ग के हिन्दुत्व को स्वीकार कर लिया था। अकबर के सेनापति आसफ खाँ ने गोंड साम्राज्य को गहरी चोट पहुँचायी जिसके कारण रानी दुर्गावती ने मुगलों से लोहा लिया और युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुईं।

मुगलों के पश्चात् मराठों के राज्य में राजगोंडों ने प्रशासन से सम्बन्धित जिम्मेदारी सम्भाली, किन्तु उस समय सम्पूर्ण गोंड जनजाति जो विकास के एक क्रम में

आगे बढ़ चुकी थी, वह एक सामाजिक टूट का शिकार हो गई। गोंड जनजाति आत्म रक्षा के लिए एकान्त व सुरक्षित स्थान की तलाश में वनीय प्रदेशों व पहाड़ी स्थानों में जा बसे और ये कई वर्गो में बँट गए। प्रथम वर्ग में राजपुरूष एवं दूसरे वर्ग में सामन्तों का हो गया, स्थानीय जनता क्षत्रीय कहलायी इनमें राज गोंड सर्वोच्च स्थान रखते हैं। ये भोजन पकाने वाले तथा हिन्दू देवी–देवताओं को मानते हैं, ये गौ माँस का सेवन नहीं करते हैं। एक ओर राजगोंडों में सांस्कृतिक परिवर्तन की दर काफी तीव्र थी तो वहीं दूसरे वर्ग के लोगों में आदिवासी संस्कृति के स्थायित्व का बोध होता है। शेष इन दोनों स्तरों के बीच में आते हैं। जो जंगलों में निवासरत हैं एवं कृषक के रूप में जीविकोपार्जन कर रहे हैं।

फुक्स के अनुसार–

'गोंड अपने समाज को अधिक ऊँचा सामाजिक स्तर दिलाने के लिए जिन बातों का पालन प्रारम्भ किया, वे हैं–हिन्दू त्यौहारों एवं उत्सवों को स्वीकार करना, पवित्र रहना और शुभ अवसरों पर हिन्दू पुरोहितों द्वारा संस्कार करवाना।'

गोंड जनजाति के सर्वाधिक प्रचलित गोत्र मरकम, मरावी, नेताम और टीकाम हैं, ये सभी गोत्र गोंड की उपजातियों में पाए जाते हैं। इन सभी गोत्रों के नाम 'टोटेम्टिक' हैं। प्रायः गोंड जनजाति समुदाय की 50 से अधिक उपशाखाएँ हैं। ये उपशाखाएँ सामाजिक स्तर एवं गोत्रों के आधार पर भी विभाजित हैं।

गोंड जनजाति की संस्कृति

संस्कृति मनुष्य जाति के शाब्दिक एवं अशाब्दिक व्यवहार और उसके भौतिक व अभौतिक प्रतिफलों का योग है। किसी भी देश व समाज की संस्कृति उसकी जीवन शैली, रहन–सहन, रीति–रिवाज, बोली–भाषा, धर्म आदि को समझने का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है। जिसके माध्यम से हमें किसी क्षेत्र में निवास करने वाले मानव समूहों की जीवन शैली व कला परम्परा का ज्ञान प्राप्त होता है। सम्पूर्ण मानव सभ्यता का विकास उसकी संस्कृति पर आधारित होता है। जनजाति की संस्कृति की झलक उनके कलारूपों, धर्म, रिति–रिवाज एवं वाचिक परम्परा आदि में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है जो उनकी प्राचीनतम् सभ्यता की परिचायक है। गोंड प्रकृति प्रेमी व प्राकृतिक जीवन उनका आदर्श जीवन है।

इनके मकान छोटे–छोटे झोपड़ीनुमा, मिट्टी से निर्मित होते हैं, घरों की छत घास–फूँस व देशी खपरैल तथा दरवाजे बाँस, लकड़ी आदि से निर्मित होते हैं। गोंड जनजाति के लोग अपने घरों का निर्माण स्वयं ही करते हैं। गोंड जनजातियों का प्रिय भोजन पेज (स्थानीय भोजन) है, पेज खान–पान का प्रमुख अंग है। ये कई प्रकार के मांस, जंगली कन्दमूल, फल एवं चावल, दाल, कुटकी आदि अनाज का सेवन करते हैं। गोंड का सर्वाधिक प्रिय पेय शराब है जिसे बच्चे, बूढ़े, युवक व महिलाएँ बड़े ही शैक से पीते हैं। इसी प्रकार गोंड जाति का वस्त्र विन्यास बहुत पारम्परिक है। गोंड पुरूष प्रायः घुटने तक धोती, कंधे पर पिछौरा और सिर पर मुरेठा बाँधते हैं साथ ही साथ कलाई में चाँदी का चूड़ा, गले में मोहरें तथा कान में बूँदा अवश्य पहनते हैं। गोंड जनजाति की महिलाएँ लुगड़ी (साड़ी) धारण करती हैं। इनको गहनों से अधिक लगाव है, इनके परम्परागत् आभूषणों में जुरिया, हलेम, ढ़ार, झरका, टरकी, बारी, टिकुसी आदि।

जन्म संस्कार गोंड जनजाति

जनजाति में पुत्र–पुत्री को समभाव की दृष्टि से देखा जाता है। गर्भधारण के लक्षण दिखते ही कुल देवी–देवता का पूजन कर उत्सव मनाया जाता है। शिशु जन्म के बाद गाँव की महिलाएँ पारम्परिक गीत सोहर व दादरे रात्रि के समय गाती हैं।

विवाह संस्कार गोंड

जनजातियों में विवाह केवल वंश की वृद्धि के लिए नहीं रचाए जाते बल्कि विवाह आदिम समाज में प्रेम, स्नेह, परस्पर सहयोग एवं सहज आर्कषण की अभिव्यक्ति का प्रतीक होता है। गोंड जनजातियों में पहले बाल विवाह का प्रचलन रहा है, किन्तु अब यह प्रथा कम हो गई है। विवाह के लिए लड़के की आयु 15 - 16 वर्ष और लड़की 13-14 वर्ष है।

मृत्यु संस्कार गोंड

पुर्नजन्म पर विश्वास नहीं करते इसलिए स्वर्ग और नरक की धारणा भी गोंडों में बहुत कम है। ये केवल देव योनि और भूतयोनि मानते हैं। गोंड समाज में ऐसी मान्यता है कि देव–देवताओं पूजा करने से मृतक की आत्मा देवत्व प्राप्त करती है। मृत्यु के बाद शव को दफनाया जाता है वहीं सम्पन्न व्यक्ति को जलाया जाता है। ये जनजातियाँ सूरज–चाँद, बादल–बिजली, वर्षा आदि के प्रति आस्थावान हैं। इनका कोई धार्मिक ग्रन्थ नहीं है, फिर भी अपने धर्म को पूरी निष्ठा और आस्था से निभाते हैं। गोंडों को अपने देवी देवताओं पर अटूट विश्वास है।

गोंड जनजातियों की कला परम्परा

गोंड जनजाति के समाज में जितना महत्त्व धर्म और संस्कृति का है उनके जीवन में कला का भी उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि उनकी कला उनकी संस्कृति का एक अंग है। गोंड समाज में लोक कलाओं का विशेष महत्त्व है जिसमें नृत्यकला, संगीतकला, चित्रकला, गुदनाकला आदि प्रमुख हैं।

गोंड जनजातियों के द्वारा किए जाने वाले प्रमुख नृत्य हैं जिनमें करमा नृत्य कर्म की प्रेरणा प्रदान करने वाला नृत्य है इसमें श्रम का विशेष महत्त्व है, श्रम को ये करम देवता के रूप में मानते हैं जिनकी पूजा के अवसर पर यह नृत्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त सैला, सुआ नृत्य, सजनी, दीवाली नृत्य, बिरहा आदि लोक नृत्य हैं। नृत्यों के साथ–साथ गीत–संगीत, कहानी–कहावतें व पहेलियां आदि गोंड जनजाति के वाचिक (बोली) परम्परा का प्रमुख अंग हैं जिसके माध्यम से इनके जीवन से जुड़े सम्पूर्ण संस्कृति का ज्ञान होता है।

भित्ति अलंकरण

गोंड कला संस्कृति एवं परम्परा का एक अन्य स्वरूप उनके घरों की दीवारों पर अलंकृत भित्ति चित्रों के माध्यम से देखने को मिलता है। गोंड जनजातियों के घर कलात्मक रूप से बने होते हैं घर बनाने में गोंड महिलाएं अधिक कुशल होती हैं। घरों की दीवारों के किनारों पर मिट्टी से तह बनाकर उस पर अनेक प्रकार की डिजाइने जिसमें प्रायः त्रिभुजाकार, वृत्तकार व ऊभरी हुई रेखाएं

बनाने की परम्परा अति प्राचीन है, इन रेखाओं से विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ जैसे–घोड़ा, हाथी, मयूर, मनुष्य आदि उत्कीर्ण करके उसमें गेरू, काजल व नील से रंग भर दिया जाता है। भित्तियों पर देवी–देवताओं के चित्रण मिथकीय आकार में किए जाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

गोंड जनजाति अपनी कला, परम्परा व संस्कृति का सदियों से निर्वाह करते आ रहे हैं। अपने क्षेत्रों में उपलब्ध साधनों का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करते हैं, जिनके माध्यम से उनकी सांस्कृतिक परम्परा का दर्शन होता है। मेरे इस अध्ययन का उद्देश्य वनीय क्षेत्रों व जंगलों में निवास करने वाली भारत एवं मध्यप्रदेश की सबसे प्राचीन व विशाल गोंड जनजाति समुह के इतिहास और कला संस्कृति को आधुनिक कला में पुनः पहचान प्राप्त होने के साथ–साथ विलुप्त होती जा रही इनकी सदियों प्राचीन आदिम कला परम्परा को जीवन्त बनाया जा सके। इसके साथ समकालीन कला जगत में आदिवासी जनजातीय कलाकारों एवं शिल्पकारों योग्य स्थान प्राप्त करके अपनी जीविका का साधन बनाने में सफल हो सकें।

चित्र सं० : 2 भित्ति अलंकरण, गोंड जनजाति, म० प्र०

निष्कर्ष

अतः अर्पयुक्त विवेचना के आधर पर यह कहा जा सकता है कि मध्य प्रदेश की गोंड जनजातियों के ऐतिहासिकता का अध्ययन करने के साथ–साथ इस शोध पत्र के माध्यम से गोंड जनजातियों की कला एवं संस्कृति का भी विस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया है। गोंड जनजाति की ऐतिहासिकता और संस्कृति की झलक उनके द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार की शिल्पाकृतियों में उनकी कला संस्कृति का स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इनके द्वारा बनायी गई काष्ठशिल्प, टेराकोटा, धातु व पाषाण आदि सभी उनकी परम्परागत एवं प्राचीन कला संस्कृति की परिचायक हैं, गोंड जनजाति के जातीय स्मृति चिह्न का बोध कलाकृतियों के माध्यम से होता है। यह निर्विवाद है कि जनजातीय समाज के लोग अपने स्वभाव के अनुरूप अपनी संस्कृति, परम्परा एवं ऐतिहासिक धरोहर को आदिम काल से ही सहेजते सँवारते आ रहे हैं। आधुनिक युग में भी अपनी संस्कृति और सभ्यता को जीवन्त बनाये रखने के लिए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

तिवारी शिवकुमार, श्रीकमल शर्मा, 2009, मध्यप्रदेश की जनजातियाँ (समाज एवं व्यवस्था), मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

शर्मा, श्रीनाथ, 2014, जनजातीय समाजशास्त्र, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

उपाध्याय, विजय शंकर, 2009, भारत की जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

श्रीवास्तव, ए0 आर0 एन0, 2007, जनजातीय भारत, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

श्रीवास्तव, ए0 आर0 एन0, 2012, जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

दीक्षित, ध्रुव कुमार, 2010, पातालकोट घाटी का भारतीया जनजीवन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

तिवारी, कपिल, 2010, सम्पदा, आदिवासी, लोक कला अकादमी।

सूद, एस0 के0, मध्यप्रदेश की अनुसूचित जनजातियाँ, आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्था, म0प्र0।

स्वंय सर्वेक्षण, एवं गोंड जनजातियों से साक्षातकार, आदिवासी जिला डिण्डौरी, मध्यप्रदेश, 10–5–2017)।